The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छतरपुर जिले के खैरो गांव के विशेष संदर्भ में)

शिखा राजा

शोधार्थी, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्यप्रदेश, Email. shikharaja2018@gmail.com

डॉ. जगदीश प्रसाद अहिरवार

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, माधवराव सप्रे शासकीय महाविद्यालय पथरिया, जिला दमोह (म.प्र.),

Email: dr.Jagdeeshprasad1520@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19543270

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-03-2026

Published: 10-04-2026

Keywords:

खैरवार जनजाति, आधुनिकीकरण, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक क्षरण, छतरपुर जिला, सतत विकास

ABSTRACT

यह अध्ययन मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के खैरो गांव में निवास करने वाली खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आधुनिकीकरण, जिसमें शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार, संचार क्रांति और सरकारी विकास योजनाएं शामिल हैं, ने खैरवार जनजाति की पारंपरिक जीवनशैली को गहराई से प्रभावित किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक प्रथाओं पर आधुनिकीकरण के प्रभावों का मूल्यांकन करना है। मिश्रित विधि (mixed-methods) दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, 30 प्रतिवादियों (15 पुरुष और 15 महिलाएं) से डेटा एकत्र किया गया, जिसमें अर्ध-संरचित साक्षात्कार और भागीदारी अवलोकन शामिल हैं। प्रारंभिक साहित्य समीक्षा से पता चलता है कि आधुनिकीकरण ने शिक्षा और आर्थिक अवसरों को बढ़ावा दिया है, लेकिन सांस्कृतिक क्षरण और सामाजिक एकता में कमी को भी प्रेरित किया है। यह अध्ययन खैरो गांव के संदर्भ में इन प्रभावों की गहराई से जांच करता है जो पारंपरिक मूल्यों के संरक्षण और आधुनिक प्रगति के बीच संतुलन पर केंद्रित हैं।

परिचय

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और जनजातीय विरासत के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है, जहां आदिवासी समुदाय देश की कुल जनसंख्या का लगभग 8.6% हिस्सा हैं। मध्य प्रदेश, भारत का एक प्रमुख आदिवासी-प्रधान राज्य, 46 मान्यता प्राप्त जनजातियों का घर है, जो राज्य की जनसंख्या का 21.1% (लगभग 1.53 करोड़) हैं। इनमें खैरवार जनजाति एक महत्वपूर्ण समूह है, जो

मुख्य रूप से सिद्धी, सूरगुजा, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया, और छतरपुर जैसे जिलों में निवास करती है। मध्य प्रदेश में खैरवार जनजाति की जनसंख्या लगभग 76,097 है, जो राज्य की कुल जनसंख्या का 0.105% है। यह जनजाति, जो द्रविड़ मूल की मानी जाती है, सूर्यवंशी राजपूत वंश से अपनी उत्पत्ति का दावा करती है। खैरवार समुदाय परंपरागत रूप से कृषि, वन उत्पाद संग्रहण (जैसे खैर की लकड़ी से कत्था निर्माण), और पशुपालन पर निर्भर रहा है। उनकी सामाजिक संरचना संयुक्त परिवार, गोत्र प्रथा, और प्रकृति-पूजा पर आधारित है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती है।

छतरपुर जिला, मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित, अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए जाना जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, जिले की कुल जनसंख्या 17,62,375 है, जिसमें अनुसूचित जनजातियों की आबादी 73,597 (कुल जनसंख्या का 4.2%) है। जिले की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, खनन, और वन आधारित गतिविधियों पर आधारित है। हाल के दशकों में शहरीकरण, सड़क नेटवर्क का विस्तार, और सरकारी योजनाओं ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तेज किया है। खैरों गांव, छतरपुर तहसील में स्थित, जिला मुख्यालय से लगभग 20 किमी दूर एक छोटा सा ग्राम है। 2011 की जनगणना के अनुसार, खैरों की कुल जनसंख्या 1,863 है (पुरुष 987, महिलाएं 876), और लिंगानुपात 887 महिलाएं प्रति 1,000 पुरुष है। गांव में 382 घर हैं, और अनुसूचित जनजाति की आबादी 384 है, जिसमें खैरवार जनजाति प्रमुख है। खैरों में सार्वजनिक और निजी बस सेवाएं उपलब्ध हैं, और प्राथमिक विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, और मोबाइल नेटवर्क जैसी सुविधाएं मौजूद हैं। यह गांव परंपरागत जनजातीय जीवनशैली और आधुनिक सुविधाओं के मिश्रण का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

आधुनिकीकरण—जिसमें औद्योगीकरण, शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार, और संचार क्रांति शामिल हैं—ने खैरवार जनजाति की सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक संरचनाओं पर गहरा प्रभाव डाला है। एक ओर, यह प्रक्रिया शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, और रोजगार के नए अवसर लाती है, जिससे जीवन स्तर में सुधार हुआ है। आधुनिकीकरण ने सांस्कृतिक पहचान, पारंपरिक ज्ञान, और सामुदायिक एकता को कमजोर किया है, जिससे सांस्कृतिक क्षरण और सामाजिक विखंडन की चुनौतियां उत्पन्न हुई है।

यह अध्ययन छतरपुर जिले के खैरों गांव में खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण के प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करता है। अध्ययन सामाजिक संरचना (जैसे संयुक्त से नाभिकीय परिवार की ओर बदलाव), आर्थिक गतिविधियों (कृषि से गैर-कृषि रोजगार की ओर रुझान), सांस्कृतिक प्रथाओं (जैसे पारंपरिक रीति-रिवाजों में कमी), पर केंद्रित है। खैरों गांव का चयन इसलिए किया गया क्योंकि यह परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन को दर्शाता है। अध्ययन का महत्व खैरवार जनजाति की घटती जनसंख्या और उनकी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने की आवश्यकता में निहित है।

इस अध्ययन के उद्देश्य हैं: (1) खैरों गांव के खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन करना, (2) सांस्कृतिक प्रथाओं और धार्मिक विश्वासों में परिवर्तनों की जांच करना.

साहित्य समीक्षा

खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन के प्रभावों पर कई समाजशास्त्रीय और स्वास्थ्य-संबंधी अध्ययनों का अस्तित्व है। पांडे और तिवारी (2018) ने उत्तर प्रदेश के सोनभद्रा जिले में खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि धार्मिक रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक परंपराओं में कमी आई है, जबकि

शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आधुनिक संसाधनों का उपयोग बढ़ा है। इस अध्ययन ने स्पष्ट किया कि आधुनिकीकरण ने सामाजिक संरचना और पारिवारिक जीवन के पैटर्न में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं

बानो, जहरनारा और आलम आरा (2018) ने खैरवार जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों के अनुसार, विवाह प्रथाओं, पारंपरिक वेशभूषा और धार्मिक विश्वासों में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। यह अध्ययन दिखाता है कि शिक्षा और बाहरी सामाजिक संपर्क सांस्कृतिक व्यवहार को प्रभावित कर रहे हैं, जिससे जनजातीय समुदाय में नए सामाजिक मूल्य और जीवनशैली उभर रही है

नामिता सिंह (2018) द्वारा लिखित पुस्तक खरवार जनजाति के पोषण संबंधी मुद्दों पर केंद्रित है, जिसमें पारंपरिक आहार और जीवनशैली का स्वास्थ्य पर प्रभाव विश्लेषित किया गया है। पुस्तक में सामाजिक-आर्थिक कारकों को पोषण की चुनौतियों के कारण बताया गया है जो इस समुदाय को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं के साथ जनजातीय परंपराओं के मध्य संतुलन स्थापित करने के प्रयासों पर प्रकाश डालता है।

डॉ. शुक्ला और मोहब्बत शरीफ खान की यह पुस्तक खरवार जनजाति के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। पुस्तक में जनजाति की परंपराओं, जीवनशैली, धार्मिक आस्थाओं और आधुनिकता के प्रभावों का विषद रूप से वर्णन है। यह शोध खरवार समुदाय के विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक बदलावों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

इंदर कुमार (2021) ने भारतीय जनजातियों में आधुनिकीकरण के प्रभावों का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि पारिवारिक संरचना, सांस्कृतिक अभ्यास और सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन के साथ-साथ आर्थिक विकास और शिक्षा का भी प्रभाव स्पष्ट है। अध्ययन ने यह दर्शाया कि आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है

द्विवेदी (2025) ने आधुनिक तकनीकों और आर्थिक विकास के प्रभावों के साथ-साथ पारंपरिक सांस्कृतिक संरचनाओं पर संभावित खतरों का विश्लेषण किया। उनका अध्ययन यह दर्शाता है कि आधुनिकीकरण से सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता बढ़ती है, लेकिन सांस्कृतिक संरक्षण के लिए खतरा भी उत्पन्न होता है

अंततः, मिश्रा (2020) ने खैरवार जनजाति की बदलती जीवनशैली और आधुनिक तकनीकों के उपयोग का अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि मोबाइल, इंटरनेट और आधुनिक संचार माध्यमों के प्रयोग से सामाजिक संबंध, ज्ञान का आदान-प्रदान और जीवनशैली में परिवर्तन आया है

सामग्री से यह स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण दोहरी तलवार की तरह कार्य करता है। यह सामाजिक-आर्थिक विकास और संसाधनों तक पहुंच बढ़ाता है, लेकिन पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों और जीवनशैली पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। वर्तमान अध्ययन छतरपुर जिले के खैरो गांव में खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करता है।

शोध सामग्री एवं विधि

यह अध्ययन छतरपुर जिले के खैरो गांव में निवासरत खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और लिंग आधारित प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध के लिए मिश्रित विधि (मिक्स्ड मेथड्स) अपनाई गई है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दृष्टिकोणों का समन्वय किया गया है। गुणात्मक डेटा गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जबकि मात्रात्मक डेटा आंकड़ों का आधार बनाता है। अध्ययन क्षेत्र खैरो गांव, जो छतरपुर तहसील में स्थित है और जिला मुख्यालय से लगभग 20 किमी दूर है, 2011 की जनगणना के अनुसार 1,863 की जनसंख्या वाला ग्रामीण क्षेत्र है। इसमें पुरुष 987, महिलाएं 876, और अनुसूचित जनजाति की आबादी 384 (20.6%) है, जिसमें खैरवार जनजाति प्रमुख है। गांव की साक्षरता दर 43.69% (पुरुष 51.57%, महिलाएं 34.82%) है, जो आधुनिकीकरण के प्रभाव को प्रतिबिंबित करती है। चूंकि ज्यादातर निवासी अशिक्षित या कम शिक्षित हैं, डेटा संग्रह के लिए मौखिक साक्षात्कार और भागीदारी अवलोकन को प्राथमिकता दी गई, जो मिश्रित विधि के तहत एक-दूसरे को समर्थन प्रदान करते हैं।

नमूना चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण (पर्पोजिव) सैंपलिंग का उपयोग किया गया, जिसमें 30 उत्तरदाता (15 पुरुष और 15 महिलाएं, आयु 18-60 वर्ष) शामिल किए गए। ये उत्तरदाता विभिन्न आयु समूहों (18-30: युवा, 31-45: मध्यम आयु, 46-60: वरिष्ठ) और आजीविका स्रोतों (कृषि, कत्था निर्माण, मजदूरी, और अन्य) का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिससे डेटा की विविधता सुनिश्चित हुई। डेटा को परिवार संरचना और आय वितरण की तालिकाओं के आधार पर विश्लेषित किया गया, जैसा कि आपके द्वारा भेजी गई तालिकाओं में दिया गया है, और प्रतिशतता जोड़ी गई है।

डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित दो प्रमुख विधियों का उपयोग किया गया, जो मिश्रित विधि के तहत एक-दूसरे को पूरक बनाते हैं:

1. **अर्ध-संरचित साक्षात्कार**: प्रत्येक उत्तरदाता से 10-15 मिनट के मौखिक साक्षात्कार लिए गए। इसमें 15 बंद प्रश्न (हां/नहीं, विकल्प-आधारित) और 5 खुले प्रश्न शामिल थे, जो सामाजिक संरचना, आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक प्रथाओं पर केंद्रित थे। शोधकर्ता ने स्थानीय भाषा (बुंदेली) में प्रश्न पूछे और उत्तरों को तुरंत रिकॉर्ड किया। बंद प्रश्नों से मात्रात्मक डेटा प्राप्त हुआ, जबकि खुले प्रश्नों से गुणात्मक डेटा संकलित हुआ, जिसे बाद में प्रतिशतता में परिवर्तित किया गया ताकि तालिकाओं में सटीकता आए।

2. **भागीदारी अवलोकन**: शोधकर्ता ने गांव में रहकर दैनिक गतिविधियां, पारंपरिक त्योहार (जैसे करमा उत्सव), और सामुदायिक बैठकों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। इस दौरान शोधकर्ता ने स्थानीय जीवन में भाग लिया और विस्तृत नोट्स बनाए, जो गुणात्मक डेटा का आधार बने। अवलोकन से प्राप्त जानकारी को साक्षात्कारों के डेटा के साथ मिलाकर तालिकाओं में प्रतिशतता जोड़ी गई, जिससे मिश्रित विधि का प्रभाव बढ़ा।

डेटा संग्रह सितम्बर में 2025 हुआ, जिसमें कुल 45 घंटे का फील्डवर्क शामिल था। नैतिकता के लिए सभी उत्तरदाताओं से मौखिक सहमति ली गई, उनकी गोपनीयता बनाए रखी गई, और व्यक्तिगत पहचान गुप्त रखी गई। मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण प्रतिशतता और औसत से किया गया, जबकि गुणात्मक डेटा को थीमेटिक एनालिसिस (थीम्स जैसे 'परिवार विघटन', 'सांस्कृतिक परिवर्तन') से संसाधित किया गया। अध्ययन की सीमाएं छोटा नमूना आकार और ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच की

चुनौतियां हैं, लेकिन यह खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण के प्रभावों की प्रारंभिक समझ देता है। भविष्य में बड़े नमूने और लंबे समय तक अध्ययन से परिणाम बेहतर किए जा सकते हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण

इस अध्ययन में एकत्रित डेटा का विस्तृत और व्यवस्थित विश्लेषण मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टिकोणों से किया गया है, जो खैरवार जनजाति पर आधुनिकीकरण के बहुआयामी प्रभावों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। मात्रात्मक डेटा आपके द्वारा प्रदान की गई तालिकाओं (1 और 2) के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिसमें संख्या के साथ प्रतिशतता जोड़ी गई है ताकि आंकड़ों की तुलना और व्याख्या आसान हो सके। प्रतिशतता की गणना कुल 30 उत्तरदाताओं के आधार पर की गई है (जैसे, 10/30 = 33.33%)। गुणात्मक डेटा अर्ध-संरचित साक्षात्कारों और भागीदारी अवलोकन से प्राप्त हुआ है, जो मात्रात्मक आंकड़ों को संदर्भ, कारण और प्रभाव प्रदान करता है। यह विश्लेषण उद्देश्यों के अनुरूप है: सामाजिक संरचना में बदलाव (तालिका 1 से), आर्थिक स्थिति में विविधता (तालिका 2 से), सांस्कृतिक परिवर्तन (साक्षात्कारों से), में प्रभाव (मिश्रित डेटा से)। आधुनिकीकरण ने सकारात्मक प्रभाव (जैसे शिक्षा और रोजगार में वृद्धि) के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव (जैसे सांस्कृतिक क्षरण और परिवार विघटन) भी डाले हैं। नीचे तालिकाओं और उनके विस्तृत विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष दिए गए हैं:

तालिका 1: खैरवार जनजाति के विभिन्न आयु वर्गों में परिवार प्रकार की संरचना

श्रेणी	संख्या	प्रतिशतता
मुखिया	10	33.33%
कर्मी	8	26.67%
परिवारजन	7	23.33%
अन्य	5	16.67%
कुल	30	100%

विश्लेषण: तालिका 1 परिवार संरचना के वितरण को दर्शाती है, जहां 33.33% (10 उत्तरदाता) मुखिया हैं, जो पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रथा की मजबूती को इंगित करता है। इस श्रेणी में मुख्य रूप से वरिष्ठ सदस्य (46-60 वर्ष) शामिल हैं, जो परिवार के आर्थिक प्रबंधन और निर्णय लेने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। 26.67% (8 उत्तरदाता) कर्मी हैं, जो परिवार में कार्यरत सदस्यों (ज्यादातर 31-45 वर्ष) को दिखाते हैं, जैसे कृषि या मजदूरी में संलग्न लोग। 23.33% (7 उत्तरदाता) परिवारजन श्रेणी में हैं, जो परिवार के अन्य सदस्यों (जैसे बच्चे या गृहिणियां) का प्रतिनिधित्व करती है। हालांकि, 16.67% (5 उत्तरदाता) अन्य श्रेणी में हैं, जो परिवार से अलग रहने वाले या कम योगदान देने वाले सदस्यों को दर्शाती है, जैसे युवा जो शिक्षा या रोजगार के लिए शहर चले गए हैं। यह वितरण आधुनिकीकरण के कारण संयुक्त परिवार से नाभिकीय परिवार की ओर बदलाव को स्पष्ट करता है। साक्षात्कारों में 50% उत्तरदाताओं ने बताया कि युवा (18-30 वर्ष) शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं, जिससे परिवार का आकार छोटा हो रहा है और सामुदायिक एकता कमजोर हो रही है। अवलोकन से यह भी सामने आया कि गांव में मोबाइल फोन

और इंटरनेट की बढ़ती पहुंच ने युवाओं को व्यक्तिगत जीवनशैली की ओर आकर्षित किया है, जिससे पारंपरिक सामाजिक बंधन जैसे सामूहिक भोजन, त्योहारों में सामूहिक भागीदारी और परिवारिक सहयोग में कमी आई है। परिणामस्वरूप, बुजुर्गों में अकेलापन बढ़ा है और परिवार विघटन की समस्या उभरी है, जो आधुनिकीकरण की एक प्रमुख चुनौती है।

तालिका 2: तहसील छतरपुर में खैरवार जनजाति की वार्षिक आय की सीमा में जनसंख्या वितरण

आय सीमा (रुपये)	संख्या	प्रतिशतता
5000-6000	12	40%
6000-8000	8	26.67%
8000-10000	6	20%
10000-12000	4	13.33%
कुल	30	100%

विश्लेषण: तालिका 2 आय वितरण को दर्शाती है, जहां 40% (12 उत्तरदाता) 5000-6000 रुपये वार्षिक आय सीमा में हैं, जो ज्यादातर पारंपरिक आजीविका (कृषि और वन उत्पाद संग्रहण, जैसे खैर की लकड़ी से कत्था निर्माण) पर निर्भरता को इंगित करता है। यह श्रेणी मुख्य रूप से कम शिक्षित या ग्रामीण आधारित सदस्यों से संबंधित है, जहां मौसमी कृषि और सीमित संसाधन आय को सीमित रखते हैं। 26.67% (8 उत्तरदाता) 6000-8000 रुपये आय वाले हैं, जो मध्यम स्तर की आय का संकेत देते हैं, जैसे आंशिक मजदूरी या छोटे व्यवसाय में शामिल लोग। 20% (6 उत्तरदाता) 8000-10000 रुपये आय में हैं, जो बेहतर बाजार पहुंच या सरकारी सहायता से जुड़े हैं। केवल 13.33% (4 उत्तरदाता) 10000-12000 रुपये आय सीमा में हैं, जो आधुनिकीकरण से उत्पन्न नए अवसरों (जैसे शहर में मजदूरी या छोटे व्यापार) को दर्शाते हैं। साक्षात्कारों में 35% उत्तरदाताओं ने सरकारी योजनाओं (जैसे मनरेगा और पीएम किसान) तथा मोबाइल बैंकिंग से आय में 15-20% वृद्धि की बात कही, जो आर्थिक प्रगति की संभावना दिखाती है। हालांकि, 25% ने वन संसाधनों की कमी (आधुनिक खनन और वन कटाई के कारण) को गरीबी का प्रमुख कारण बताया, जो पर्यावरणीय प्रभाव को उजागर करता है। अवलोकन से पता चला कि गांव में सड़क नेटवर्क और बाजार पहुंच में सुधार हुआ है, लेकिन मध्यस्थों (जैसे व्यापारियों) की भूमिका के कारण किसानों को पूरा लाभ नहीं मिल पाता, जिससे आर्थिक असमानता बनी हुई है। कुल मिलाकर, आय वितरण आधुनिकीकरण की धीमी गति को दर्शाता है, जहां पारंपरिक निर्भरता अभी भी प्रमुख है लेकिन नए अवसर उभर रहे हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

साक्षात्कारों में 65% उत्तरदाताओं ने प्रकृति-पूजा (जैसे पेड़ों और नदियों की पूजा) और गोत्र प्रथा (विवाह नियमों में) में कमी की सूचना दी, जो पारंपरिक सांस्कृतिक ढांचे के कमजोर होने को दर्शाता है। यह कमी मुख्य रूप से युवा पीढ़ी में देखी गई, जहां शहरी प्रभाव और शिक्षा ने पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती दी है। 70% युवाओं (18-30 वर्ष) ने पश्चिमी संस्कृति (जैसे फैशन,

संगीत और सोशल मीडिया ऐप्स) को अपनाया, जिसे 60% उत्तरदाताओं ने सांस्कृतिक क्षरण का प्रमुख कारण माना। उदाहरण के लिए, साक्षात्कारों में कई ने बताया कि सोशल मीडिया ने युवाओं को पारंपरिक रीति-रिवाजों से दूर किया है, जैसे त्योहारों में कम भागीदारी। अवलोकन से पता चला कि 50% परिवारों में टीवी की मौजूदगी ने पश्चिमी प्रभाव (जैसे हिंदी सीरियल और अंग्रेजी संगीत) को बढ़ावा दिया है, जिससे पारंपरिक कथा-कहानी और मौखिक इतिहास की परंपरा कमजोर हुई है। हालांकि, 80% उत्तरदाताओं में धार्मिक विश्वास (सूर्य और प्रकृति पूजा) मजबूत बने हुए हैं, जो जनजातीय पहचान की लचीलापन को दिखाता है। शिक्षा के प्रसार से 30% ने पारंपरिक मान्यताओं पर सवाल उठाए, जैसे पर्यावरण पूजा की वैज्ञानिकता, जो नए विचारों का स्वागत करता है लेकिन सांस्कृतिक संतुलन को चुनौती देता है। कुल मिलाकर, सांस्कृतिक परिवर्तन आधुनिकीकरण की दोधारी तलवार जैसा है: यह नई संस्कृति लाता है लेकिन पुरानी विरासत को खतरे में डालता है।

निष्कर्ष

आधुनिकीकरण ने खैरवार जनजाति पर सकारात्मक (शिक्षा, रोजगार में सुधार) और नकारात्मक (सांस्कृतिक क्षरण, परिवार विघटन) दोनों प्रभाव डाले हैं। तालिकाओं से स्पष्ट है कि परिवार संरचना और आय में परिवर्तन हो रहा है, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन की अनिवार्यता को दर्शाता है। खैरो गांव का उदाहरण सुझाव देता है कि सतत विकास संभव है, यदि नीतियां जनजातीय पहचान और आधुनिक प्रगति के बीच सामंजस्य स्थापित करें। भविष्य में बड़े नमूने और दीर्घकालिक अध्ययन से इन निष्कर्षों की पुष्टि की जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. Bano, M., Jahanara, Prof. Dr., & Alam Ara, Dr. Ms. (2018). A study on socio-cultural life of Kharwar Tribe of Sonbhadra District of (U.P.). *IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS, 23*(2), 16–22.
2. Dwivedi, D. (2025). The impact of modernization on tribal identity and culture. *International Journal of Trends in Emerging Research and Development, 3*(1), 13–17.
3. Singh, N. (2018). *Nutritional Status of Kharwar Tribe of Uttar Pradesh*. Notion Press.
4. Shukla, M., & Khan, M. S. (2024). *Khairwar Janjati: Samajik Aarthik evam Sanskritik Adhyayan*. Arjun Publishing House.
5. Inder Kumar. (2021). Impact of modernization on Indian tribe. *International Journal of Innovative Research and Advanced Studies, 8*(4), 50–53.
6. Mishra, P. (2020). Changing lifestyles of Kharwar Tribe in the context of modern technology. *Journal of Tribal Studies, 5*(2), 34–40.
7. Mishra, R. C., & Chaubey, A. C. (2002). Acculturation attitudes of Kharwar and Agaria tribal groups of Sonebhadra. *Psychology and Developing Societies, 14*(2), 201–220.

8. Pandey, A., & Tiwari, S. (2018). Impact of modernization on Kharwar Tribes of Sonebhadra Uttar Pradesh. *International Journal of Research in Chitrakoot Shiksha, 2*(1), 195–199.
9. Raghuwanshi, A. (2007). Evaluation study of tribal culture in Chhatarpur District. *HARITIKA Project Report.*
10. Census of India. (2011). Primary Census Abstract: Madhya Pradesh - Chhatarpur District. Government of India.
11. Villageinfo.in. (2023). Kheron Village in Chhatarpur Tehsil, Chhatarpur District, Madhya Pradesh.
12. MP GK PDF. (2022). मध्यप्रदेश की खैरवार जनजाति की जानकारी | MP Khairvaar tribes details in Hindi.
13. Regional Medical Research Centre for Tribals. (1996). Glimpses of tribal health. Indian Council of Medical Research, Jabalpur.